

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
	भाखल दरिया साहेब सत सुँत बन्दी छोड़ मुक्ति के दाता नाम निशान सही।					
सतनाम	ग्रन्थ अग्र ज्ञान	सतनाम		सतनाम		सतनाम
	साखी - १					
सतनाम	अरज कीन्ह सिर नाय, दया निधि सुन लीजिए।	सतनाम		सतनाम		सतनाम
	सार शब्द समुझाय, बहुरि ना भव जल आवहीं॥					
सतनाम	चौपाई	सतनाम		सतनाम		सतनाम
	युक्ति मुक्ति औ भुक्ति विरागा। सब गुन कहेऊ प्रेम अनुरागा।१।	सतनाम		सतनाम		सतनाम
सतनाम	याते जग जीव नष्ट न जाई। जो कोई प्रेम मगन होय आई।२।	सतनाम		सतनाम		सतनाम
	संशय सांपिन बसै विकारा। डस्यौ सकल मुनि होहिं न पारा।३।					
सतनाम	त्रिगुन तीन ताप तन भयऊ। आवागवन दुःख दारुन सहेऊ।४।	सतनाम		सतनाम		सतनाम
	ब्रह्म कहहिं सब भर्म भुलाना। यह घट थापि नाहिं पहचाना।५।					
सतनाम	यहि विधि देखा सबै अनुरागा। योगी यति औ भेष विरागा।६।	सतनाम		सतनाम		सतनाम
	जीव जीव ब्रह्म सब कहई। उलटि पलटि भवसागर दहई।७।					
सतनाम	झूठी बात मूठी गहि राता। कर्म कीस है मनै विधाता।८।	सतनाम		सतनाम		सतनाम
	साखी - २					
सतनाम	साँच कहै जग मारिया, मरना साँझ बिहान।	सतनाम		सतनाम		सतनाम
	झूठी मोटरी माथ, पर पढ़ते गीता पुरान॥					
सतनाम	चौपाई	सतनाम		सतनाम		सतनाम
	आपन अंग आप पहिचानौ। त्रिगुन तीनि एहि विधि जानौ।९।	सतनाम		सतनाम		सतनाम
सतनाम	त्रिगुन तीनि ताप तन अहई। उलटि पलटि भवसागर दहई।१०।	सतनाम		सतनाम		सतनाम
	जरा मरन फिरि जन्म संयोगा। रोग शोक है विविध वियोगा।११।					
सतनाम	त्रिगुन मता सब कोई जानी। विनसि गया ज्यों बून्द बून्द पानी।१२।	सतनाम		सतनाम		सतनाम
	यहि में जीव शिव मन साँचा। यहि सुमिरे सुर मुनि नहिं बाँचा।१३।					
सतनाम	मन प्रभुता यह साम्रथ कीन्हा। सो सब देखि मता रचि लीन्हा।१४।	सतनाम		सतनाम		सतनाम
	मन नहिं मुआ मुआ सब कोई। कर्माती सब मन ते होई।१५।					
सतनाम	सो मन करम है काल कसाई। अज्या पालि चीक फिनि खाई।१६।	सतनाम		सतनाम		सतनाम
	साखी - ३					
सतनाम	त्रिगुन तीनों ताप है, व्यापा सब पर आय।	सतनाम		सतनाम		सतनाम
	राम कृष्ण सो कौन बड़ा है, सो तन गया बिलाय॥					
सतनाम	1	सतनाम		सतनाम		सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	मन शहजादा अहै तुम्हारा। बिना हुकुँम का करै विचारा।१७।	सतनाम	हुकुँम तुम्हारा अदल चलाया। की बे हुकुँम सबै जहँड़ाया।१८।	सतनाम	ऐसन सुत हित किमिकर भयऊ। जाके सर्वस आपन दियऊ।१९।	सतनाम
सतनाम	वाके बसी जीव सब कीन्हा। जिनिस चुराय चोर सब लीन्हा।२०।	सतनाम	जीव लीन्ह खालरी सब खाली। कची पकी चूने जग माली।२१।	सतनाम	बनमाली बनहीं महँ बासा। सब घट फिरे अजब तमाशा।२२।	सतनाम
सतनाम	झीन छीन देखे नहिं आवे। देइ विश्वास नहिं आस पुरावे।२३।	सतनाम	अमरलोक बैकुण्ठ बखाना। जरा मरन निश्चय हम जाना।२४।	सतनाम		सतनाम
			साखी - ४			
सतनाम	अरज कीन्ह सिरनाय के, सर्वस तन मन दीन्ह।	सतनाम	दया करो बहु भाँति यह, होहु कबै जनि भीन्ह॥	सतनाम		सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	भिन्न भाव नहिं तुमसे अहई। शब्द मूल सोई निज गहई।२५।	सतनाम	जापर चिट्ठी मूल सो आवै। यम जालिम नहिं तेहि सतावे।२६।	सतनाम	जाके छापा सनदि हजूरी। तासे निकट रहौं नहिं दूरी।२७।	सतनाम
सतनाम	तुमसे छल बल जो वह करई। हुकुँम हमार सदा वह डरई।२८।	सतनाम	जीव उलटि जब पिऊ पर लागा। उलटि पिउ तब जीव पर जागा।२९।	सतनाम	शक्ति के बल है पुरुष दोहाई। पुरुष बिना कैसे सुख पाई।३०।	सतनाम
सतनाम	शक्ति भक्ति के यह गुन हीता। जाय लोक इहई यम जीता।३१।	सतनाम	निगम नेति गुन कहै विचारी। हारै सब सुर नर मुनि झारी।३२।	सतनाम		सतनाम
			साखी - ५			
सतनाम	सावन केरी बादरी, छाँह हुआ जग माँहि।	सतनाम	बाहर रहा सो ऊबरा, भीज गये घर माँहि॥	सतनाम		सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	जीव जगत में किम कर भयऊ। की कोई अंश वंश यह रहेऊ।३३।	सतनाम	अंडज पिंडुज उखमज झारी। कहि नहिं जाय विविध बिस्तारी।३४।	सतनाम	विधि लिखानी कैसे लिखा लीन्हा। कैसे अंक लिलाटै दीन्हा।३५।	सतनाम
सतनाम	जन्म मरन धन धाम संयोगा। रोग दोष औ विविध वियोगा।३६।	सतनाम		सतनाम		सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सुन	नर	मुनी	यही	गुन	ज्ञाता।	जो फल लिखा सो देहिं विधाता।३७।
चुंडित	मुंडित	पंडित	योगी।	कर्म	लिखा	फल बहुत वियोगी।३८।
भेष	अलेख	अनन्त	विचारी।	सब	मिलि	मता यही जग डारी।३९।
कहाँ	मुक्ति	कहाँ	अंक	विचारी।	नर्क	स्वर्ग कहबे बिस्तारी।४०।
साखी - ६						
यह	कछु	मता	जगत	का,	वेद	विहित कै दीन्हा।
संशय	सब	में	व्यापिया,	औंटे	जल	बिनु मीन॥
चौपाई						
कहाँ	आदि	मूल	की	बाता।	सुनहु	सन्त प्रेम निज राता।४१।
अभय	लोक	जहाँ	भय	नहिं	रहेऊ।	रहेऊ अचिन्त चिन्ता तब कियेऊ।४२।
नहिं	उहाँ	मरन	न	जन्म	संयोगा।	नहिं दुःख सुख नहिं विपति वियोगा।४३।
छुधा	तृषा	नहिं	भूख	पियासा।	नींद	न आलस नहिं यम त्रासा।४४।
नहिं	तहाँ	उड़िगन	गगन	सब	झारी।	नहिं तहाँ चाँद सूरज बिस्तारी।४५।
नहिं	तहाँ	रैन	दिवस	कर	भाऊ।	नष्ट कष्ट नहिं फेरि बनाऊ।४६।
नहिं	उहाँ	पानी	पवन	करि	साजा।	नहिं किसान बीज कर काजा।४७।
अमर	सुगन्ध	अमर	तहाँ	रहई।	अमी	सदा गुन इमि कर कहई।४८।
साखी - ७						
नहीं	जिमि	नहिं	खेह	है,	नहिं	कर्म कवलेश।
सदा	आनन्द	मंद	नहिं	उहवाँ,	द्वन्द	नहीं वहि देश॥
चौपाई						
रहे	निरंजन	हमरे	पासा।	सदा	प्रेम	सेवक निज दासा।४९।
अबदुलह	दुलह	तब	कहेऊ।	दुलहिन	दिल	में मनसा कियेऊ।५०।
इच्छा	दिक्षा	हम	ताकहँ	दीन्हा।	मनसा	रूप कामिनि रचि लीन्हा।५१।
भयऊ	अनंग	रंग	तब	अयऊ।	अबदुलह	दुलहिन रस पयऊ।५२।
भोग	भाग	यह	सब	विधि	अयऊ।	तीनि देऊ जोइनि जनमयऊ।५३।
हंस	वंश	सब	हमरे	पासा।	इहाँ	जीव से कीन्ह परगासा।५४।
शेषनाग	जिमि	बरसन	लागा।	काम	बीज	तब खोते जागा।५५।
अंकुर	अंग	संग	तब	भयऊ।	काम	बीज किसानहिं दियेऊ।५६।
3						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - ८			
सतनाम			बीज से बीज उत्पन्न किया, सो बीज सब कहँ दीन्ह।		सतनाम	
			जीव जीव सब जीव है, ब्रह्म इनते भीन्ह॥			
			चौपाई			
सतनाम			भयऊ विविध जीव जग मे केता। अंजुज पिंडुज ऊखमज एता।५७।		सतनाम	
			मन अनंग रंग यहि भाँती। मन अनंत भव जाति अजाती।५८।			
			जहँ जहँ जीव शिव मन भयऊ। जीव शिव मिलि करता कहेऊ।५९।			
सतनाम			सो शिव कर्म काल के साथा। तेहि सुमिरै किमि होहिं सनाथा।६०।		सतनाम	
			रमि रहा तब राम कहाया। सुख संपति तब स्वारथ लाया।६१।			
			शिव औ राम दुजा नहिं कहिए। करहु विवेक ज्ञान निजु लहिए।६२।			
सतनाम			भूलि भवन में सबै भुलाना। कारन मन करता कै जाना।६३।		सतनाम	
			सो मुनि निगम निरूपनि कियेऊ। वेद पुरान मता यह ठयेऊ।६४।			
			साखी - ९			
सतनाम			घर छोड़े घर ना मिला, निगम किन्ह घर जानि।		सतनाम	
			हारि कहा बेचून है, लिन्ह त्रिगुन कहँ मानि॥			
			चौपाई			
सतनाम			पिता-पुत्र मिलि यह गुन फंदा। तामें जीव सब चहहिं अनंदा।६५।		सतनाम	
			ऐसन सुत बैरी बलिवंडा। सात द्वीप पृथ्वी नवखांडा।६६।			
			जीव जगत अपने बस कीन्हा। ज्यों किसान खेती कहं चीन्हा।६७।		सतनाम	
सतनाम			सुखा सागर में सुखामय रहेऊ। अग्र धानि में अमृत पयऊ।६८।			
			पुहुप दीप में पुहुप बिछौना। दया दीप सदा सुखा चैना।६९।			
			कारन कौन जो हम पहुँ आई। सो निज अर्थ कहो समुझाई।७०।		सतनाम	
सतनाम			अति दारुन दुःख को यह सहई। कहों ज्ञान बिरला कोई लहई।७१।			
			वेद कितेब सबै कोई मंचा। सत्य बचन सुनि लागत कंचा।७२।			
			साखी - १०			
सतनाम			दरसन से परसन भयो, परसि अमर पद लीन्ह।		सतनाम	
			होनी होय सो होयगा, तन मन अर्पन कीन्ह॥			
			चौपाई			
सतनाम			मम वाके दीन्हों मरजादा। कहौं बचन सुनो शहजादा।७३।		सतनाम	
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
जो उन्हिं बहुत उपद्रव ठयेऊ। अति प्रचंड आपन गुन कहेऊ।७४।	तीनि लोक में मम हों बरता। हमतें दुजा कौन है करता।७५।	जीव कहँ बहुत पीरा जब कीन्हा। तब मैं पान सहज कहँ दीन्हा।७६।	जाहु सहज अबदूलह पासा। लड़ो भिड़ो कुछ करो तमासा।७७।	सहज बचन बोले सिरनाई। चले तुरंत लोक पहुँ आई।७८।	चले सहज दिल बहुत पछताया। उठा गरज के त्रास दिखाया।७९।	सहज दीप तोर लेऊँ छोड़ाई। नहिं तो पीठ दे जाहु पराई।८०।
बिचले भूमि ते अति दुःख पाई। सहज दीप में रहे छिपाई।८१।	साखी - ११	एक युग जब बीति गौ, कलऊ वाको नाम।	तब मैं खोज निकालिया, जहाँ सहज को धाम॥	चौपाई	देखि दरस बहुत सकुचाना। नैन छिपाय के पदुम बखाना।८२।	धन्य धन्य तुम पिता हमारा। तुम साहब हम सेवक तुम्हारा।८३।
अग्नि पानी पवन कर रंगा। ऐसन बान कीन्ह प्रसंगा।८४।	उठा गरज कै तड़पन लागा। तब मैं भूमि छोड़ि कै भागा।८५।	सहज दीप में रहा छिपाई। अति भौ लाज न बदन दिखाई।८६।	सुनि कै मोहि दरद अति भयऊ। बहुत दया गुन तापर अयऊ।८७।	तब मैं दया दीप चलि गयऊ। शाहजादा सों यह गुन कहेऊ।८८।	जोगजीत तुम सुत हमारा। दरिया दरगुन सब बिधि सारा।८९।	साखी - १२
जाहु जहां अबदुलह, है दुलहिन के साथ।	ताके मारि निकालहु, सब जीव होहिं सनाथ॥	चौपाई	हुकुंमी सो जो हुकुंम जोगावे। बिना हुकुंम कुछ काम न आवे।९०।	द्वाल बंद द्वाली जन सोई। मनसफदार चले नहिं गोई।९१।	सूर बीर परगट जग नीका। कंची बचन बोले नहिं जीका।९२।	सोई प्रीति हीत मैं जाना। ताहि सूत कर करौं बखाना।९३।
पूत कपूत सों कर्म बिकारा। जियतहिं मुआ मरा सौ बारा।९४।	5	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	मर्द सोई मैदान सँभारे। तन मन वारि भूमि पर टारे।६५।	सतनाम	मुखा पर तीर सो बीर बिराजे। सन्मुख रहे रन महँ छाजे।६६।	सतनाम	धन्य धन्य धन्य हैं सोई। पिता बचन गुन परगट होई।६७।	सतनाम
सतनाम	साखी - १३					सतनाम
सतनाम	तब तोहरे तन रोस भौ, गोस भया बलवीर।					सतनाम
सतनाम	चलै प्रचंड अखंड अति, महा कठिन रणधीर॥					सतनाम
सतनाम	चौपाई					सतनाम
सतनाम	कीन्ह सलाम स्वाद सब खोये। उजल अंग रंग सब धोये।६८।	सतनाम	सहज दीप में तुम चलि गयऊ। शाजहादा सहज जहँ रहेऊ।६९।	सतनाम	अग्र अंग रंग सुख खानी। अति सुगंध सोधा की घानी।१००।	सतनाम
सतनाम	पलंग पलंग सो पुहुप बिछाया। अमर सुगंध तहाँ छवि छाया।१०१।	सतनाम	अति विलास सुख दुःख नहीं तहवाँ। अमृत प्रेम सदा गुण जहवाँ।१०२।	सतनाम	उनसे कहा जो बचन बिचारी। आदि अंत सब कहि निरुआरी।१०३।	सतनाम
सतनाम	पहले रन पर चढ़ै जो धाई। का बिचले तुम पीठ दिखाई।१०४।	सतनाम	जीव के लोभ छोभ जिन जाना। बहुत प्रिया प्रान कहँ माना।१०५।	सतनाम	साखी - १४	
सतनाम	तन सूर औ मन सूर है, जीव सूर ज्यों होय।					सतनाम
सतनाम	आगे पीछे विचारि के, दुर्मति घालै धोय॥					सतनाम
सतनाम	चौपाई					सतनाम
सतनाम	सहज कहे सुनो निज भ्राता। तन मन वारि ज्ञान गुन गाता।१०६।	सतनाम	सोलह सूत पुरुष रचि लीन्हा। थै थपना सब कै करि दीन्हा।१०७।	सतनाम	सुगंध संग अपने कर लीन्हा। दयादीप सुकृत कहँ दीन्हा।१०८।	सतनाम
सतनाम	पुहुप दीप अचिंत बिराजै। बहुत बिलास प्रेम तहँ छाजै।१०९।	सतनाम	अमूदीप दरसन कर भाऊ। दरसन परसन बहुत सुख पाऊ।११०।	सतनाम	सहज दीप यह हम कहँ दीन्हा। गंध सुगंध सबै रचि लीन्हा।१११।	सतनाम
सतनाम	अबदुलह दुलहिन चित राता। सात दीप नवखंड बिधाता।११२।	सतनाम	काहू पताल भार सिर दीन्हा। कहि बिरंचि बेद रचि लीन्हा।११३।	सतनाम	साखी - १५	
सतनाम	काहू खंड अखंड है, उदित कला प्रचंड।					सतनाम
सतनाम	निशवासर कल फेरतु है, छाय रहा ब्रह्मंड॥					सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	ऐसन काल जो जाल सँवारी। कहै पुरुष तेहिं देहु निकारी।११४।	सतनाम	पान लीन्ह मैं कीन्ह पयाना। मन बच कर्म दुजा नहिं जाना।११५।	सतनाम	देखा देखी दरशन जब भयऊ। कोपि काल निकट चलि अयऊ।११६।	सतनाम
सतनाम	सुनो सहज यह सत तुम्हारी। सहज दीप तोर करौ उजारी।११७।	सतनाम	अगिन बान औ पवन समेता। तब मैं बिचलि चलेउ छोड़ि खेता।११८।	सतनाम	अब तुम चलौ हमारे साथ। साहेब बल वहि करों अनाथा।११९।	सतनाम
सतनाम	लीन्ह लियाय चले दोउ भ्राता। जहँ अबदूलह सैन सुपाता।१२०।	सतनाम	उठा गर्ज के गर्व हंकारी। तू सहज कैसे पग डारी।१२१।	सतनाम		सतनाम
			साखी - १६			
सतनाम	कौल करार तेहि दीन का, सो तुम दीन्ह बिसारि।	सतनाम	अबकि बार नहिं बाँचिहो, फेंकों तुम्हें उखारि॥	सतनाम		सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	हम नहिं लड़ब भिड़व नहिं भाई। हरि जीति देखब प्रभुताई।१२२।	सतनाम	हमतौं हार गये तेहि दीना। अब तासे सो भये अधीना।१२३।	सतनाम	सुनि बचन तब तड़पन लागा। अगिन बान ले चहुँ दिशि जागा।१२४।	सतनाम
सतनाम	सघन बान अति बूँद समाना। राखा साहब आप अमाना।१२५।	सतनाम	फिर भीड़ा वह हाँक प्रचारी। दाबिस कर धै कीन्ह दुखारी।१२६।	सतनाम	तब मैं फेंका ताहि उखारी। गया सून में फेरि संभारी।१२७।	सतनाम
सतनाम	माया चरित कुछ रची बिचारी। छटा चमकि चहुँ घटा पसारी।१२८।	सतनाम	उड़ि गई माया बान नहिं लागा। बहुत प्रीति करि बचनहिं पागा।१२९।	सतनाम		सतनाम
			साखी - १७			
सतनाम	भ्रातहिं भ्रातहिं मिलि करि, तेजहु बाद हंकार।	सतनाम	यह सब कौतुक पुर्ख का, बोला बचन बिचार॥	सतनाम		सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	तीन लोक यह हम कहँ दीन्हा। पाछे बात उलटि कै लीन्हा।१३०।	सतनाम	दान देहिं फिर लेहिं मँगाई। यह अचरज कछु कहा न जाई।१३१।	सतनाम	ऐसन छल बल कोई न करई। हमके दीन्ह बहुरि फिर लरई।१३२।	सतनाम
सतनाम	नहिं हम चोर चोरी नहिं कीन्हा। हुकुंमी सदा अमल हम लीन्हा।१३३।	सतनाम		सतनाम		सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
हाकिम हुकुम दोसर किमि भयेऊ। हम पर जबर जुलुम यह कियेऊ।१३४।						
अनंत फाँस यह फंद हमारा। किसहु भाँति नहिं होंहिं उबारा।१३५।	सतनाम					सतनाम
काम क्रोध लोभ हम डारहिं। यदि बिधि घैंचि जीव कहँ मारहिं।१३६।	सतनाम					सतनाम
अति झिन छिन होय पैठों जाई। लखि नहिं परै बेद गुन गाई।१३७।	सतनाम					सतनाम
साखी - १८						
माया बुद्धि मम साथ में, सबे करौं अनाथ।						
हमके जीति किमि जाइहें, केहि बिधि होहिं सनाथ॥						
चौपाई						
अनंत बान तुम्हारा अहई। एक बान पुरुष का लहई।१३८।	सतनाम					सतनाम
अनंत बान घैंचि जब लीन्हा। फिर तुम जग में होहु अधीना।१३९।	सतनाम					सतनाम
जोर जुलुम करहु जनि भाई। पुरुष बचन सुनो चित लाई।१४०।	सतनाम					सतनाम
करहु बंधोज बंद जनि डारहू। बूझे ज्ञान ताहि के तारहू।१४१।	सतनाम					सतनाम
जो कोई सनदि सुरति में चिन्हे। सत शब्द निशि बासर भिने।१४२।	सतनाम					सतनाम
सोवत जागत शब्द संयोगा। करै विवेक सो बिरह वियोगा।१४३।	सतनाम					सतनाम
जो यह नाम सजीवन जाने। दूजी बात कबहिं नहिं माने।१४४।	सतनाम					सतनाम
दूजा दुविधा जेहि नहिं होई। अमरलोक के पहुँचे सोई।१४५।	सतनाम					सतनाम
साखी - १९						
भवसागर के आगरे, अग्र नाम है सार।						
सोई संत सुबुद्धि हैं, खेई उतारो पार॥						
चौपाई						
जो कोई बूझे शब्द तुम्हारा। भवसागर से होहिं उबारा।१४६।	सतनाम					सतनाम
रहनी गहनी सत शब्द समावै। बहुरि लोक ठिकाना पावै।१४७।	सतनाम					सतनाम
शील संतोष सो शब्द विराजै। ज्ञान गम्य छत्र तहँ छाजै।१४८।	सतनाम					सतनाम
माया में मगन कबै नहिं होई। खरचे खाय ज्ञान निज सोई।१४९।	सतनाम					सतनाम
सफन सफा सदा है सोई। दर्दवंत दया है वोई।१५०।	सतनाम					सतनाम
रोके कोई नहिं रंक भै राऊ। जिन यह शब्द सजीवन पाऊ।१५१।	सतनाम					सतनाम
दसी हमार सदा जो त्यागे। भूमि हमार भाव से जागे।१५२।	सतनाम					सतनाम
सुर्खा स्याह औ जर्द रंगीना। यह सब दसी हमारो चीन्हा।१५३।	सतनाम					सतनाम
8						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम



सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - २०			
सतनाम			अब जनि बोलहु भ्राता, कहा शब्द मैं सार। बेगि जाहु बिलम्ब नहिं, जहवाँ पिता तोहार॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			चले सो बेगि बिलम्ब न किएऊ। सत पुरुष जहवाँ निज रहेऊ।१५४। कोर्निस कीन्ह अदब सिरनाई। विनय बचन सब कही सुनाई।१५५। अबदुलह खाँव कबुल यह कीन्हा। हम नहिं रहौं पुरुष सो भीन्हा।१५६। जो नर करहिं भक्ति यह भाऊ। ताहि लेई छपलोक पठाऊँ।१५७। रोकहिं नहिं यह हुकुँम तुम्हारा। यही बचन निज कीन्ह करारा।१५८। जो कोई ज्ञान गमी होय ज्ञाता। करहिं प्रेम भक्ति निजु राता।१५९। दसी हमार कबहिं नहिं राखै। निजु गहि प्रेम नाम सत भाखै।१६०। सोई हंस है वंश तुम्हारा। चले बिचारि गहे टकसारा।१६१।		सतनाम	
			साखी - २१			
सतनाम			कहा बचन सब जानि कै, जो उन्हिं कहा बुझाय। तुम साहेब सतपुरुष हो, वाका करो विचार॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			जीव जीव के करे न क्रोधा। लड़ै भिड़ै यह मन बड़ योधा।१६२। मन है सबमें मने लड़ावे। मन ऐगुन करि जीव पर लावे।१६३। मन है कठिन क्रोध बड़ बीरा। कठिन कमान घैंचे यह तीरा।१६४। मन है सूर साधु जन सोई। मन बिनु काम कछु नाहीं होई।१६५। मन है तर्क त्याग यह योगा। मन संयोग ज्ञान रस भोगा।१६६। मन है तेग देग औ दाना। मन लिए ज्ञान गमी परवाना।१६७। जब निज मन होय मिथ्या त्यागे। मनहिं विचार ज्ञान निजु पागे।१६८। मन जागे मन जोगी साँचा। चिन्हे बिना सुर नर मुनि नाचा।१६९।		सतनाम	
			साखी - २२			
सतनाम			मन औगुन मन ज्ञान है, मन सब ही के साथ। मनहि विचार ज्ञान निज राखै, सो जन भये सनाथ॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			यह दो सूत महा बड़ योधा। लड़हिं भिड़हिं तन बड़ है क्रोधा।१७०। इनसे भूमि भाव नहिं रहिहै। कारन काम जीव सब दहिहै।१७१।		सतनाम	
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
इन्के सर्व शीतल नहिं बाता। अति करि क्रोध जीव उत्पाता।१७२।	सार शब्द नहिं मुखा में आवै। अति हंकार गर्व दिखावे।१७३।	लेई तेग तब देग न भावै। रन पर चढ़ै वीर गुन गावै।१७४।	वीर धीर दूनो परचंडा। सात दीप पृथ्वी नवखाण्डा।१७५।	जीव चेतावनि चित नहिं ठयऊ। बिना ज्ञान गमि नहिं भयऊ।१७६।	जीव है बगरा बाज उड़ाना। मारहिं धके होहिं पीसमाना।१७७।	
साखी - २३						
महा महा भट बीर यह, कहा न मानहिं ज्ञान।						
करो चरित्र चित जानि के, सार शब्द पहिचान॥						
चौपाई						
दस अंश निरंजन बीरा। ग्यारह अंस सुकृत रनधीरा।१७८।	दस अंश लोक महँ राखो। एक अंश सुकृत निज भाखो।१७९।	कर कोमल यह कमल सुभाऊ। ज्ञान गमी इनके तन आऊ।१८०।	शीतल शब्द स्वरूप विराजै। नाम सुगंध तहाँ सिर छाजै।१८१।	नीच ऊँच धर देऊँ अवतारा। करे प्रेम निज भक्ति सुधारा।१८२।	राव रंक जो होय सुल्ताना। करे त्याग तर्क निज ज्ञाना।१८३।	जीव दरस करि परसहिं पाऊँ। सदा प्रेम करहिं निजु भाऊ।१८४।
अकूफ हमार अकिल ज्यों पावै। हमको छोड़ि दुजा नहिं भावै।१८५।						
साखी - २४						
ऐसन अंश वंश जग माहीं, तब जीव होय उबार॥						
सार शब्द निज भाखहीं, गुन गहि होखहिं पार॥						
चौपाई						
देखा आदि अंत गुन नीका। हम कहँ दीन्ह अदल को टीका।१८६।	वाके राज काम सुख देऊँ। हम कहँ अंश वंश लिख लेऊ।१८७।	जहवाँ काल कठिन यह राजू। हमके दीन्ह ज्ञान कर साजू।१८८।	छन छन पल पल करै लड़ाई। कहौं कौन विधि ज्ञान बुझाई।१८९।	ऐसन जाल काल यह देशा। तहाँ कहन सत शब्द संदेशा।१९०।	अति परचंड काल कर कर्मा। शीतल संतोष रहै किमि धर्मा।१९१।	निनु बल खल किमि कर डरई। अति है दुष्ट काल बल धरई।१९२।
10						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	अति करि कोमल कर्म तुम दीन्हा। भूमि पर चलो भक्ति लवलीन्हा।१९३।	सतनाम	साखी - २५	सतनाम	आदि अंत गुन देखिकै, अर्ज कीन्ह सिरनाय।	सतनाम
सतनाम	जेहि में खुशी तुम्हारी, सो किछु करो उपाय॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम	खुशी हमारी खास जुबाना। तुमसों निकट सदा दिल माना।१९४।	सतनाम
सतनाम	सोवत जागत शब्द सरूपा। दृष्टि प्रेम करि अजब अनूपा।१९५।	सतनाम	चौकी चहुँदिशि दृष्टि हमारी। पल पल छन छन नाहिं बिसारी।१९६।	सतनाम	तुमसों प्रेम प्रीति निज ज्ञाता। सहिजादा साँचे मम बाता।१९७।	सतनाम
सतनाम	तुम सुत हित हो दुजा न कोई। तुम से प्रेम सदा मम होई।१९८।	सतनाम	निसाफ करो सब आस पुराओं। दुर्जन दल सब दूरि बोहाओं।१९९।	सतनाम	मैं जागृत हूँ जग में ऐसा। मम सतवर्ग सतगुण तैसा।२००।	सतनाम
सतनाम	तीन गुण ते मम गुन न्यारा। निर्गुन सर्गुन सब सकल पसारा।२०१।	सतनाम	निर्गुन विदेह देह नहिं देखे। नाम निःअक्षर दृष्टि में पेखे।२०२।	सतनाम	साखी - २६	सतनाम
सतनाम	निर्गुन निःअक्षर नाम है, सर्गुन शरीर तुम्हार।	सतनाम	ऐन झरोखे देखिए, हम रहों दुनों सों न्यार॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम
सतनाम	विनय कीन्ह दोनों कर जोरी। दया दृष्टि यह मिनती मोरी।२०३।	सतनाम	बचन तुम्हारी सदा गुन हीता। काल प्रचंड सही तुम जीता।२०४।	सतनाम	तुमते हारि बारि के जावे। सोई दया जो मम पर आवे।२०५।	सतनाम
सतनाम	दरसन परसन बचन तुम्हारी। अदेख भये जनि देहु बिसारी।२०६।	सतनाम	बचन करार औ रंग करारा। तुम जाग्रित जग सब विधि सारा।२०७।	सतनाम	निकट दया दरस गुन हीता। गुन औगुन मम जानु पुनीता।२०८।	सतनाम
सतनाम	जैसे चातृक को चित एका। है बिस्वास बूंद गुन टेका।२०९।	सतनाम	तन मन जीव यह तुम पर वारी। ज्यों चकोर चित टरत न टारी।२१०।	सतनाम	साखी - १७	सतनाम
सतनाम	तन मन धन और तुम पर, यह सब अर्पण कीन्ह।	सतनाम	करो दया बहु भाँति यह, रहो कबहिं जनि भीन्ह॥	सतनाम	11	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	दया दरद मम सदा सहाई। करों दया मम प्रेम लगाई।२११।	सतनाम	हाल हजूर बचन कहि दीन्हा। सत्त बचन मानो परवीना।२१२।	सतनाम	शाहजादा तुम सदा हमारा। बचन रेखा नहिं टरै करारा।२१३।	सतनाम
सतनाम	अदल हमार है अदब बिचारा। लेइ उतारों मैं करतारा।२१४।	सतनाम	ज्यों छेंड़े त्यों लेइ छोड़ाई। सब विधि तुरों काल चतुराई।२१५।	सतनाम	अच्छा अबेहा जो जिव होई। लोक पयाना करिहें सोई।२१६।	सतनाम
सतनाम	सहर हमार सदा गुलजारा। पुहुप बेवान है अमृत सारा।२१७।	सतनाम	अनवन चीज नाना बहु भाँति। सदा सुखी गुन हंस कि जाती।२१८।	सतनाम		सतनाम
			साखी - २८			
सतनाम	ऐसन शहर हमार है, जहाँ दिवस नहिं रात।	सतनाम	चन्द सूर नहिं तहवाँ, नहिं उड़िगन की जात॥	सतनाम		सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	ऐसन शहर बहर के पारा। केहि बिधि हंसा होय निनारा।२१९।	सतनाम	यह भव जल है जाल जंजाला। डारि जाल उर देत है साला।२२०।	सतनाम	केहि विधि रहै रहनि का नीका। शक्ति रंग किमि लागे फीका।२२१।	सतनाम
सतनाम	माया मंदिर गुन सब कहँ नीका। असल ज्ञान गुन लागत फीका।२२२।	सतनाम	करै जतन बहु माया न त्यागे। गहिरे गाड़ि अवर फिर माँगे।२२३।	सतनाम	साँच कहै नहिं झूठ बेसहना। चाहै अमी फल भव में रहना।२२४।	सतनाम
सतनाम	हंस दशा गुन केहि विधि आवै। सदा उजल जहाँ मैल न पावै।२२५।	सतनाम	छूटे मैल मलगज नहिं होई। ऐसी युक्ति बताओं सोई।२२६।	सतनाम		सतनाम
			साखी - २९			
सतनाम	कहे दरिया दरसन भला, परसि कमल पद सोय।	सतनाम	नाम उजागर आगर जग में, राखो बचन जनि गोय॥	सतनाम		सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	तुमसे गोय ज्ञान नहिं राखों। रहनि सदा है सो गुन भाखों।२२७।	सतनाम	अक्षर मूल में रहनि हमारा। निअक्षर गुन यहि विधि सारा।२२८।	सतनाम	काया कर्म में कर्ता नाहीं। पांच तत्व गुन परगट आहीं।२२९।	सतनाम
सतनाम	मन करता यहि जीव के साथ। छन छन पल पल सबके माथा।२३०।	सतनाम		सतनाम		सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	जो मन चिन्हें माया है ऐसा। खरचे खाया भवन में वैसा।२३१।	सतनाम	शक्ति सरूप स्वाद बिसरावे। मूल गहनि ते निकट न आवे।२३२।	सतनाम	सूक्ष्म इन्द्री छेमा समेता। शब्द सांगि रन छोड़े न खोता।२३३।	सतनाम
सतनाम	मंदा हुआ माया का बांधा। छूटे तबे ज्ञान जब साथा।२३४।	सतनाम	साखी - ३०	सतनाम	माया भली है संत की, ज्यों मता बुझे गुरु ज्ञान।	सतनाम
सतनाम	सतगुरु से परिचय करै, खर्चे खा अमान।।	सतनाम	चौपाई	सतनाम	रहे अलेप लेप नहिं लावे। उजल दसा हंस गुन भावे।२३५।	सतनाम
सतनाम	दरिया दरपन दर है साँचा। सत बचन बोले नहिं काँचा।२३६।	सतनाम	छोटा खोटा कष्ट कुरिन्दा। मै न मजीठ कीट भृंग बृन्दा।२३७।	सतनाम	रजनी रंग संग सुख देखा। झलकि खदोत दृष्टि में पेखा।२३८।	सतनाम
सतनाम	झूठ साँच मन माहिं बिलोये। दिनमनि दीन्ह त्रिमिरि कहँ खोये।२३९।	सतनाम	ऐसे कंज पुन्ज पर राता। पदुम प्रकाश भँवर तह माता।२४०।	सतनाम	यह गुन तेजे तप्त बिरागा। वा गुन ग्यान सो प्रेम सुभागा।२४१।	सतनाम
सतनाम	माया जतन जन बहुत समोई। छीन लेहिं तब छेंके न कोई।२४२।	सतनाम	ऐंचत धौंचत श्वान सरीरा। जात सूख निकलत बड़ पीरा।२४३।	सतनाम	साखी - ३१	सतनाम
सतनाम	तन मन धन औ सीस देहिं, विश्वम्भर के गांव।	सतनाम	उलटि देखे भवसागर, कहाँ मिले निजु ठाँव।।	सतनाम	चौपाई	सतनाम
सतनाम	सोइ करो जीव बंद जो छूटे। जाते प्राण काल नहिं लूटे।२४४।	सतनाम	सोइ करो जो भव नहिं आवे। महा कठिन दुःख दारुन दावे।२४५।	सतनाम	सहज सुरति संत सुख पावे। रज बिंद काया साधि नहिं आवे।२४६।	सतनाम
सतनाम	ऐसन रहनि गहनि कहि दीजै। अमृत नाम प्रेम रस पीजै।२४७।	सतनाम	सामर्थ सत्य तुम सब विधि नीका। अमर रंग भंग नहिं फीका।२४८।	सतनाम	तुम ते सब गुन औगुन दासा। काटि दिजै यह यम के फाँसा।२४९।	सतनाम
सतनाम	नाम पियूषन अमृत साना। गुन औगुन जनि करौ बखाना।२५०।	सतनाम	दया दरद यह दरसन सोई। मेटहु दाग कर्म सब खोई।२५१।	सतनाम		सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - ३२			
सतनाम			सकल मंडि है काल की, कर्म करावे जानि।		सतनाम	
			भ्रम मन्डी सब भेष में, गस्ती बस्ती मानि॥			
			चौपाई			
सतनाम			दरिया सुनों बचन हमारा। सुनहु शब्द कहों तत्व सारा।२५२।		सतनाम	
			दफा तुम्हार दुःख नहिं पावे। निर्मल ज्ञान प्रेम लव लावे।२५३।			
सतनाम			सदा सफेद रंगीन न भावे। भांग अफीम पान नहिं खावे।२५४।		सतनाम	
			अमी पत्र प्रेम गुन ज्ञाता। यहि विधि कहों सुनो सत बाता।२५५।			
सतनाम			गस्ती संग बसै जनि कोई। रटू फटू जो सब जग होई।२५६।		सतनाम	
			भिंडी भर्म कर्म भरिपूरा। तासो ज्ञान कहै सो सूरा।२५७।			
सतनाम			भनै वेद तब भेदहिं पावे। छोड़े कर्म ज्ञान में आवे।२५८।		सतनाम	
			निर्मल होय सो हंस हमारा। सदा प्रेम पंडित गुन सारा।२५९।			
			साखी - ३३			
सतनाम			चौरासी को जीव, मानुष की खलरी पेन्हे।		सतनाम	
			खोजत मिले न पीव, कोटि जन्म भरमत फिरे॥			
			चौपाई			
सतनाम			उलटि पलटि चौरासी भरमा। यह सब कठिन काल कर करमा।२६०।		सतनाम	
			कीट फतिंग ज्ञान बिनु होवै। भक्ति बिना सब सर्वस खोवे।२६१।			
सतनाम			मीन मांस रसना पर दीवे। अमी बिसारि बारुन कहँ पीवे।२६२।		सतनाम	
			सुरसरि जल भरि जावन करई। कासा काटि कुंभ में भरई।२६३।			
सतनाम			श्याम रंग गुन दोष बखाना। रहा पुनीत सो भया बेगाना।२६४।		सतनाम	
			मदिरा मद कुमति भरि गायऊ। साधु संगति की निन्दा कियेऊ।२६५।			
सतनाम			भया कृमी सो नयन बिहूना। यह कछु कर्म पाप है पूना।२६६।		सतनाम	
			साधु द्रोह काल बस भयऊ। महा अधोर नर्क में गयऊ।२६७।			
			साखी - ३४			
सतनाम			दो दो सिंघ शरीर में, चार चरन एक पूँछ है।		सतनाम	
			भया बैल महँ मीर, भारी लाद लदाइया॥			
			चौपाई			
सतनाम			सात दीप नव खांड बिराजै। यासे लोक दुजा कछु छाजै।२६८।		सतनाम	
			दीप दीप सब वेद बखाना। याते लोक दुजा नहिं जाना।२६९।			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
उन्यास कोटि पृथ्वी कहलावे । स्वर्ग पताल पहाड़ बतावे । २७० ।	यहि में लोक धाम सब कहई । गन गन्धप मुनि तामें रहई । २७१ ।	तामें इन्द्र गणेश महेशा । तामें गौरी फनपति शेषा । २७२ ।	तेहिं में सागर सात समाना । चन्द सूर दो बीर अमाना । २७३ ।	तामें निशि बासर सब कहई । याते बिलग दुजा नहिं लहई । २७४ ।	यहि विधि गमी सबै मिलि किन्हा । जानी बात सभे लिख लीन्हा । २७५ ।	
			साखी - ३५			
			अर्ज हमारा मानिये, कहा बचन सिरनाय ।			
			छपलोक हम जनिया, देह धरा इहाँ आय ।।			
			चौपाई			
ज्ञान गमी हम सब कुछ जाना । बिना पुछै नहिं मिलै ठिकाना । २७६ ।	हम जाना औ तुमने जाना । कैसे बुझिहें संत सुजाना । २७७ ।	दया करहु दरसन सत भाऊ । आदि अंत गुन बिमल सुनाऊ । २७८ ।	नहिं शंसय कछु सागर सूला । सखा बहुत जग तुम है मूला । २७९ ।	मूल पाया तब डार घोनरा । सखा पत्र जग बहुते फेरा । २८० ।	पावहिं एक भँवरि बहु भाँती । पसरि रहा सब जाति अजाती । २८१ ।	विविध कमल भँवर भौ केता । कहि कुबुद्धि कहि सुबुद्धि सुखेता । २८२ ।
कहिं भक्ति कहिं भगवत गीता । कहिं ज्ञान कहिं गर्व में रीता । २८३ ।			साखी - ३६			
			यह सब कौतुक जगत में, औगुन गुन का भाव ।			
			कहें दरिया बिरला दर जाने, खेले कुमति का दाव ।।			
			चौपाई			
यह तुम पूछा अगम कि बाता । अगम निगम जेहि वेद न राता । २८४ ।	जहाँ ले दृष्टि तहाँ ले देखो । आगे गमी कौन यह पेखो । २८५ ।	पहिले मूल फूल तब भयऊ । सखा अनेक पत्र तब ठयऊ । २८६ ।	जाकर मूल सोई पर जाने । आदि अंत सो कथा बखाने । २८७ ।	सात दीप पुहुँमी पर अहई । सात दीप वेद यह कहई । २८८ ।	आगे बन खंड झाड़ पहारा । कहाँ ले कहों विविध विस्तारा । २८९ ।	यदि मेदिनी कर अंत न कहई । वेद कितेब कहाँ ले कहई । २९० ।
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
	उदया गिरी श्रृंग एक अहई। भानु कला परगट तहँ कहई।२६१।					
सतनाम	साखी - ३७					सतनाम
	रूम साम औ सर्व दीप ले, भानुकला प्रकाश।					
सतनाम	अंतरदीप एक राह गुप्त है, कहीं बचन सुन दास॥					सतनाम
	चौपाई					
सतनाम	आवे जाय मर्म ना जाने। ऐसन भेद कौन पहिचाने।२६२।					सतनाम
	रैनि दिवस यह यहि विधि होई। जहाँ लगि मेदिनी सृष्टि समोई।२६३।					
सतनाम	छपलोक छत्र है दूजा। तहाँ न चाँद सूर्य का पूजा।२६४।					सतनाम
	सहसर अठासी पलंग अहई। यह विस्तार लोक में कहई।२६५।					
सतनाम	जोजन साठ पालंग कर भाऊ। गंध सुगंध तहाँ छवि छाऊ।२६६।					सतनाम
	राजित हंस मगन सुख तहवाँ। अमृत की झरि यही विधि जहवाँ।२६७।					
सतनाम	खानि जवाहर जगमग जोती। मनि प्रकाश औ निर्मल मोती।२६८।					सतनाम
	नहिं तहाँ पानी पवन का लेखा। नहिं तहाँ चाँद सूर्य यह देखा।२६९।					
सतनाम	नहिं तहाँ उड़िगन गगन अकाशा। नहिं तहाँ दुःख सुख भूख पियासा।३००।					सतनाम
	साखी - ३८					
सतनाम	चार दरवाजा चार दिशि, जेहि दिशा को जाय।					सतनाम
	सनद हमारा छपा है, छपलोक में आय॥					
सतनाम	चौपाई					सतनाम
	दरिया कहें दरस भल भयऊ। आदि अंत का कथा सुनयऊ।३०१।					
सतनाम	सत करता हो जअर अमाना। मन बच कर्म तुम्हें पहचाना।३०२।					सतनाम
	हमके संशय कछु नहिं अहई। जगत जीव कैसे निरबहई।३०३।					
सतनाम	इहाँ उहाँ कतहीं ले राखा। सत बचन निश्चय यह भाखा।३०४।					सतनाम
	जरा मरन जीव बड़ दुःख पावे। सोई करौ छपलोकहिं जावे।३०५।					
सतनाम	हम कहँ पठवहु काल के देशा। कठिन काल तन दे कवलेशा।३०६।					सतनाम
	चेत चेतावनि जग महँ कीन्हा। तुम्हरी बचन सदा लवलीन्हा।३०७।					
सतनाम	जेहि विधि हंस लोक कहं जाई। आवागमन सब दुःख मेटाई।३०८।					सतनाम
	साखी - ३९					
सतनाम	हंस वंश सुख पावहीं, सदा तुम्हारो पास।					सतनाम
	भ्रम विसारि सरन कहँ लागा। चरन कमल की आस॥					
सतनाम						सतनाम



[illegible]

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
केदली कपूर बास जब पाया। मेटिगौ केदली कपूर कहाया।३२६।						
बहुत सुगंध जो सेत सोहाई। नाम कपूर बासना पाई।३३०।	सतनाम					सतनाम
जैसे चुम्बक चुमुकि चित लागा। निकली गाँसी दुःख सब भागा।३३१।						
जैसे भृंगा भाव सब लीन्हा। मेटिगौ कीट भृंगा तब कीन्हा।३३२।						
ऐसन रंग रतन उपजयऊ। भया साधु सोच तब गयऊ।३३३।	सतनाम					सतनाम
साखी ४२						
जाके खोजत४ सुर नर, यह निरंकार कहि दीन्ह।						
अजर अंग भंग नहिं कबहीं, सतपुरुष होहिं भीन्ह॥						
चौपाई						
लागे लगन तब होय बिरागी। लगन बिना गुन किमि कर जागी।३३४।						
जौ लगि आशिक इश्क न होवे। तौ लगि पाप दुर्मति नहिं खोवे।३३५।	सतनाम					सतनाम
ज्यों लगि गगन मगन नहिं बासा। किमि करि देखे अजब तमाशा।३३६।						
साढ़े तीन हाथ बिस्तारा। तामें भूला सकल संसारा।३३७।						
यह घट फूटि टूटि जब गयऊ। वह नहिं टूटा जो निर्मल रहेऊ।३३८।	सतनाम					सतनाम
प्यास भला पर त्रिषा न गयऊ। जल है निकट दूरि किमि धयऊ।३३९।						
दूरि धोखा है धंध बिकारा। मृग मुआ देखा विस्तारा।३४०।						
सतगुरु ज्ञान गमी जब होई। निर्मल ज्ञान मुक्ति फल सोई।३४१।	सतनाम					सतनाम
साखी - ४३						
आपन चित जब हित होय, तब प्रीति करै गुरु ज्ञान।						
आयना ऐन में दीशे, ऐसी दृष्टि अमान॥						
चौपाई						
तुम पर दया दृष्टि मैं कीन्हा। रहों निकट मम होऊँ न भीन्हा।३४२।						
जहँ जहँ जन्म तुम्हारा भयऊ। तहँ तहँ आय दरस मैं दियऊ।३४३।	सतनाम					सतनाम
काटो बन्ध रहै नहिं बंधा। अभय लोक जहँ शब्द सुगंधा।३४४।						
जो जीव करिहें तुमसे प्रीति। जाय लोक तेहि यम नहिं जीती।३४५।						
शील संतोष शब्द लव लावे। भक्ति विवेक ज्ञान गुन गावे।३४६।	सतनाम					सतनाम
साधु चिन्हें यह सुमति समेता। उज्ज्वल दशा हंस गुन एता।३४७।						
मुकुता बिना चोंच नहिं खोले। नाम सुधा अमृत रस बोले।३४८।						
लोचन लाल सुगंध सुभाऊ। सहि विधि दशा हंस गुन पाऊ।३४९।	सतनाम					सतनाम
18						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - ४४			
सतनाम			नीर छीर विवरन करो, यह गुन मता विवेक।		सतनाम	
			माया बुद्धि विचारि के, गहे चरन महँ टेक॥			
			चौपाई			
सतनाम			सोई हंस वंश गुन नीका। जाके मनि मस्तक है टीका।३५०।		सतनाम	
			बग बाउर निकट न जावे। मीन मांसु रसना जो पावे।३५१।			
			तेजे विकार विगिंध विरोगा। निरलेप है निर्मल योगा।३५२।			
सतनाम			संशय काल कर्म नहिं आवै। अभय लोक कहँ सो जन जावै।३५३।		सतनाम	
			तन मन धन सतगुरु पद जोहे। अति विराग गुन एहि विधि सोहे।३५४।			
			अति अतित मीन मन भएऊ। दया दीपक तहाँ निर्मल पयऊ।३५५।			
सतनाम			निर्मल अंग सो संत सोहाई। शक्ति के रंग सो संग न जाई।३५६।		सतनाम	
			दृष्टि दृष्टि में दृष्टि मिलावै। अविगति रूप छत्र तहाँ छावै।३५७।			
			साखी - ४५			
सतनाम			छकित भया छवि देखिके, छटा चमकै नूर।		सतनाम	
			अगम निगम गुन देखि के, मगन हुआ कोई सूर॥			
			चौपाई			
सतनाम			सूर वीर कोई अतित अलेपा। आड़ न अटक मीन जल खेपा।३५८।		सतनाम	
			ऐना अंक साफ जब होई अंक बंक गढ़ टूटै सोई।३५९।			
			शक्ति स्वाद सब लागत फीका। यह गुन सदा बुझै कोई नीका।३६०।			
सतनाम			होय गवन भवन ज्यों त्यागे। सुरति संयोग तहाँ यह जागे।३६१।		सतनाम	
			हाट बाट घाट नहिं छेका। चलि भौ हंस वंस गुन एका।३६२।			
			गया सो सुर सुरति जहँ देखा। अपनहिं आपु दुजा नहिं पेखा।३६३।			
सतनाम			दूजा काल कर्म निकुतावे। जाय अमरपुर बहुरि न आवे।३६४।		सतनाम	
			नरक स्वर्ग सुख गया ओराई। धन सतगुरु जिन भेद बताई।३६५।			
			साखी - ४६			
सतनाम			गया अमरपुर लोक में, अमर सुगन्ध सोहाय।		सतनाम	
			पुहुप पलंग तहाँ पाइया, आवागमन मेटाय॥			
			चौपाई			
सतनाम			मुद्रा चारि चतुर दल सोहे। त्रिकुटी साधि पवन के जोहे।३६६।		सतनाम	
			19			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
निद्रा साधि आतम कहँ साधो । पाँचो इंद्री निग्रह बाँधो ।३६७।	इंगला पिंगला सूर चढ़ावे । घैंची डोरि गगन में आवे ।३६८।	बंक नाल औ अंक संयोगा । ब्रह्माण्ड अखंड विरोगा वियोगा ।३६९।	पाँच तत्व तौले दिन राती । छन छन पल पल गुने यह भाँती ।३७०।	मोतांगी पवन उलटि जब लावे । उलटा कुंभ नीर नहिं आवे ।३७१।	यहि विधि तारीक तर्क है योगा । पवन संयोग प्रेम रस भोगा ।३७२।	नरक स्वर्ग ते होखो न्यारा । की भवचक में परे बेचारा ।३७३।
			साखी - ४७			
			एतना योग युक्ति करि, मुक्ति भुक्ति बैराग ।			
			अमर लोक के जावहीं, कि लगा करम का दाग ॥			
			चौपाई			
सुनौ बचन मैं कहों बिचारी । निरखि परखि कोई ज्ञान सुधारी ।३७४।	यह सब करम काल के योगा । कठिन काल नहिं होई विरोगा ।३७५।	तन साधत फिर भया असाधी । मन नहिं चिन्है उलटि फिरि बाँधी ।३७६।	योग युक्ति योगी सब भाखो । त्रिकुटी पवन तहाँ ले राखो ।३७७।	इंगला पिंगला पवन का खेला । पाँच तत्व सुख मनि का मेला ।३७८।	चारिउ मुंद्रा मत तेहि भयऊ । असंख योग युक्ति नहिं अयऊ ।३७९।	तीन लोक जिन्ह तन के जाना । साढ़े तीन हाथ परवाना ।३८०।
			जरा मरन फिरि भव में आवे । मन परचै बिनु यह दुःख पावे ।३८१।			
			साखी - ४८			
			मन करता कहँ सुमिरहिं, सो मन करै विनाश ।			
			रूपरेखा देखे बिना, डारत है ग्रिव फाँस ॥			
			चौपाई			
रूप देख यह किमि कर देखे । कौन ज्ञान यह गमि में पेखे ।३८२।	वाकी सनदि साधु किमि पावे । कैसे विवरण दुई देखावे ।३८३।	मन और ज्ञान रंग बिलगावे । निःअक्षर किमि अक्षर पावे ।३८४।	नाम निःअक्षर इमि कहँ कहई । मने निःअक्षर जीव कहँ दहई ।३८५।	बिना रूप कैसे लखि आवे । आदि दृष्टि सो कैसे पावे ।३८६।	यह सब संकट विकट की बाता । औघट घाट सबनि में राता ।३८७।	
			20			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	दया तुम्हारी तबे बनि आवे । तबहीं साधु मुक्ति फल पावे ।३८८।	सतनाम	नष्ट कष्ट सब मिटै विकारा । भवसागर जब खेई उतारा ।३८९।	सतनाम	साखी - ४६	सतनाम
सतनाम	दया सिन्धु सुखसागर, हंसनि देहु सुख धाम ।	सतनाम	आवागमन मेटाई के, अजर तुम्हारा नाम ॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम
सतनाम	मन की सनदि लखौ तुम ज्ञाता । यह मन जग में भया विधाता ।३९०।	सतनाम	घट में पैठि फिरंग फिरावे । आनकर रसना सो गुन गावे ।३९१।	सतनाम	आन के चक्षु में छल से देखे । माया रूप में कामिनि तहाँ पेखे ।३९२।	सतनाम
सतनाम	आन के श्रवन में विरह समावे । विरह बान उलटि के लावे ।३९३।	सतनाम	आन के नासा बास कुवासा । यह मन भँवर अजब तमाशा ।३९४।	सतनाम	एहि विधि खोले खेल खोलावे । अपने रेख रूप देखि आवे ।३९५।	सतनाम
सतनाम	जैसे पेखना पुतरी धावे । घौंचे डोरी सभै नचावे ।३९६।	सतनाम	घर में बैठि कथे बहु ज्ञाना । यह मत समझहु सन्त सुजाना ।३९७।	सतनाम	आपन निगम निरूपन करई । ज्ञान मते में कारन धरई ।३९८।	सतनाम
सतनाम	साखी - ५०	सतनाम	अजर हमारा अंग है, अजर हमारा नाम ।	सतनाम	हम कहँ तुम कहँ जानिहें, बसहिं अमरपुर धाम ॥	सतनाम
सतनाम	चौपाई	सतनाम	जो जीव करिहें तुमसो प्रीति । लेई चलौं तेहि यम नहिं जीति ।३९९।	सतनाम	जाके मैं चितवों चित लाई । लेऊँ निकालि लोक में आई ।४००।	सतनाम
सतनाम	दरिया दरसन दया जो भाखौ । 'बेवाहा' नाम निरंतर राखौ ।४०१।	सतनाम	काया अग्र दृष्टि परगासे । भर्मकर्म दूनहूँ के नासे ।४०२।	सतनाम	सनदि हमारि साँच के जाने । खल के बचन मृथा सब माने ।४०३।	सतनाम
सतनाम	तासो मोसो अंतर नाहीं जैसे भँवर कमल के पाहीं ।४०४।	सतनाम	एहि विधि राखों रक्षा होई । भव संशय सब जात बिगोई ।४०५।	सतनाम	माया चिन्हें औ ज्ञानहिं चिन्हें । चिन्हें साधु प्रेम रस भिन्हें ।४०६।	सतनाम
सतनाम	साखी - ५१	सतनाम	सत सुकृत कहँ चिन्ह के, दया विवेक बिचारि ।	सतनाम	सतगुरु से परिचै करे, भवजल जाय न हारि ॥	सतनाम
सतनाम	21	सतनाम		सतनाम		सतनाम

चौपाई

सतनाम	कहे दरिया धन भाग हमारा। धन्य धन्य सत्त करतारा।४०७।	सतनाम
सतनाम	भाग भला जो तुम कहँ पाया। दर्शन दया अमृत फल आया।४०८।	सतनाम
सतनाम	अगम अगाधि अगोचर देखा। सब विधि करता दृष्टि में पेखा।४०९।	सतनाम
सतनाम	करहिं भक्ति जीव होहिं सनाथा। बिना भक्ति भव होहिं अनाथा।४१०।	सतनाम
सतनाम	करे अकूफ अकिल जो आवे। छापा सनदि मोहर सो पावे।४११।	सतनाम
सतनाम	छापा पाय कपट जो त्यागे। निरमल हंस ज्ञान गुन लागे।४१२।	सतनाम
सतनाम	एहिविधि कहिए साँच सफाई। उज्ज्वल दशा नहिं मैल समाई।४१३।	सतनाम
सतनाम	हंस वंश गुन गहिर गंभीरा। सदा प्रेम ज्ञान मति धीरा।४१४।	सतनाम

साखी - ५२

वेवाहा पुरुष अमान है, दरसन दीन्हों आय ।  
सहिजादा सुक्रित हैं, सब विधि कहा बुझाय ॥

ग्रन्थ अग्रज्ञान पूर्ण